New Man International Journal of Multidisciplinary Studies
(UGC Approved Journal No. 45886)
ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

35.

हिंदी दलित कहानी का वैचारिक पक्ष

प्रा.डॉ.संजय जाधव
सहयोगी प्राध्यापक
हिंदी विभाग, श्री शिवाजी महाविद्यालय, परभणी-महाराष्ट्र

सारांश *: कहानी विधा प्रत्येक भाषा साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा होती है। कहानी साहित्य की समृद्धता से ही उस भाषा विशेष के साहित्य की समृद्धता को नापा जा सकता है। जिस भाषा साहित्य की कहानी जितनी समृद्ध होगी उस भाषा का साहित्य उतना ही समृद्ध होता है। हिंदी साहित्य को समृद्ध करने में हिंदी कहानी का तथा प्रतिभासंपन्न कहानीकारों का बडा महत्व रहा है। हिंदी कहानी इसलिए भी अधिक समृद्ध है क्यों कि हिंदी कहानी में भारतीय समाज का समग्र प्रतिबिंब अंकित हुआ है। सदियों से दबे-कुचले वर्ण-वर्ग समूह की चेतना हिंदी कहानियों में अत्यंत सार्थक एवं प्रभावी रूप में अभिव्यक्त किया गया है। भारतीय समाज में जिस समूह को हाशिये पर रखा गया, जिसे कभी मुख्य प्रवाह में घुल-मिलने नहीं दिया गया। ऐसे समूह के जिंदगी की भुक्तभोगी पीडा, वेदना, दुःख, दर्द, अभाव, उपेक्षा, प्रताडना को दलित कहानीकारों ने अपनी कहानियों में मार्मिक तथा संवेदनशील रूप में रखा। दलित विमर्श को स्थापित करने में जितना योगदान आत्मकथा लेखकों का है उतना ही योगदान कहानी लेखकों का भी माना जाता है। साहित्य के प्रतिमान तथा कहानी तत्वों के आधार पर जिस कहानी को हिन्दी की सर्वप्रथम दलित कहानी माना जाता है वह 'सलाम' कहानी दलित जीवन की चेतना को अत्यंत सार्थक रूप में अभिव्यक्त करती है। यह कहानी दलित जीवन का वर्णन नहीं बल्कि डॉ.अम्बेडकर के क्रांतिविचारों से निर्मित दलित चेतना से लैस कहानी हैं। हिंदी की दलित कहानी का वैचारिक पक्ष पूर्णतः डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर जी के मानवमुक्ति विचारधारा पर आधृत है।*

प्रस्तावना -

यह सच है कि मानव जीवन का इतिहास शोषण और दमन का इतिहास रहा है, परंतु यह भी सच है कि शोषण और दमन के विरूद्ध संघर्ष का इतिहास बडा ही तेजस्वी है। सामर्थ्यवान व्यक्ति तथा समूह ने सदैव अपने से कमजोर तथा शांतिप्रिय व्यक्ति-समूह पर अपना वर्चस्व स्थापित कर उसे अपने अधिनस्थ करने का प्रयास किया है। विश्व के कोणे-कोणे में यह मानसिकता देखने को मिलती है। मानवी सभ्यता के साथ मानवी मूल्यों को स्वीकार किया गया। मनुष्य को गुलाम बनाना तथा उस पर लिंग, धर्म, वर्ण, जाति तथा अन्य मानव निर्मित विभेदों के आधार पर भेदभव करना अमानवीय कहा जाने लगा। मनुष्य के मानवाधिकारों को प्रतिष्ठित तथा संरक्षित करने के लिए व्यापक जन आंदोलन हुए। सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, औद्योगिक आदि क्रांतियों ने व्यक्ति और समाज जीवन में व्यापक रूप से परिवर्तन हुए। समता, स्वातंत्र्य, बंधुता तथा समाजिक न्याय यह तत्व वैश्विक मानव मूल्यों के रूप में स्वीकार किय गये। उनका संरक्षण करने वाले समूदाय को सभ्य तथा पुरोगामी समाज कहा जाने लगा। मानव मूल्यों की प्रतिष्ठापना तथा मानव मूल्यों का संरक्षण करने के लिए अनेक महामानवों ने, चिंतकों ने तथा समर्पित कार्यकर्ताओं ने आंदोलन किये। जिसके परिणाम स्वरूप विश्व में विषमता, विभेद आदि पर आधारित मानव मूल्यों के विरूद्ध विधियाँ अमानवीय तथा मानवता विरोधी कही जाने लगी। भारतीय समाज में अनेक प्रकार की मानव एवं मानवता विरोधी विधियाँ प्रचलित थी। यह विधियाँ धर्म, परंपरा तथा संस्कृति के रूप में इतनी बद्धमूल हो गयी थी कि इनका विरोध करने की मानसिकता सर्व सामान्य व्यक्ति में नहीं थी। परंतु यह भी सच है कि महामानवों ने मानव निर्मित विषमताओं को नष्ट करने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। चर्वाक, तथागत गौतम बुद्ध, पेरियार, महात्मा कबीर, गुरु नानक, महात्मा फुले, राजर्षि शाहु तथा डॉ. आंबेडकर जैसे महामानवों ने भारतीय समाज में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने के लिए अपनी समस्त क्षमताओं का चरम उपयोग किया। अपने

मूलगामी चिंतन से उन्होंने समाज मानस को वैचारिक रूप से अपनी स्थिति बदलने के लिए तथा जो विधियाँ उनका शोषण करती हैं उनके खिलाफ आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया। अपने क्रांतिकारी विचारों से उन्होंने दलित-पिछडों को प्रचलित विकृत व्यवस्था के विरूद्ध खडे रहने का मनोबल प्रदान किया। स्वातंत्र्योत्तर काल के भारतीय दलित साहित्य में इन महामानवों का वैचारिक चिंतन भारतीय साहित्य में अभिव्यक्त होने लगा। जिसे व्यापक रूप में इसे दलित साहित्य कहा जाने लगा। हिंदी साहित्य की अन्य साहित्यिक विधाओं की अपेक्षा कहानी विधा में समतावादी तथा मानवतावादी महामानवों का वैचारिक चिंतन अधिक मुखर रूप में देखा जा सकता है। हिंदी के दलित कहानियों का वैचारिक पक्ष का विवेचन करना ही प्रस्तुत शोधालेख का मुख्य उद्देश्य है।

शोधालेख के उद्देश्य -

१. साहित्य और वैचारिकता का अंतःसंबंध स्पष्ट करना
२. दलित साहित्य के अविर्भाव की पृष्ठभूमि को स्पष्ट करना
३. दलित साहित्य की प्रेरक परिस्थितियों का विवेचन करना
४. हिंदी दलित साहित्य के वैचारिक पक्ष का आकलन करना
५. हिंदी कहानी साहित्य में अभिव्यक्त विचारधारा का विवेचन करना
६. हिंदी कहानी साहित्य में अभिव्यक्त वैचारिक पक्ष की विशेषताओं को स्पष्ट करना

साहित्य और वैचारिकता का अंतःसंबंध :

साहित्य के प्रमुख तत्वों में भाव के साथ-साथ बुद्धि तत्व अनिवार्य होता है। बौद्धिकता से तात्पर्य है विचार करने की, सोचने, समझने की, तर्क, कार्यकारण भाव को समझने की, अनुमान करने की तथा स्मृति धारण करने की क्षमता । विचार करने की क्षमता मनुष्य में होती है तथा विचार को अभिव्यक्त करने की, उसे अमंल में लाने की भी क्षमता मनुष्य में होती है। साहित्य में मानव के विचारों को भावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त किया जाता है। विचार हीन साहित्य का कोई मूल्य नहीं होता। साहित्यकार के विचारों का प्रभाव उसके द्वारा निर्मित साहित्य पर पडना स्वाभाविक होता है। साहित्यकार जिस तरज जीवन को और अपने आपको देखता है उसका प्रतिबिंब उसके द्वारा सृजित साहित्य में देखने को मिलता है। जो विचार सर्वव्यापक होता है, जो विचार मानव मूल्यों की, वैश्विकता की तथा मानवता का हितैषि होता है वही विचार सर्व व्यापक तथा चिरंतरन होता है। इसलिए हम देखते हैं कि जो साहित्यकार समाज के व्यापक सुख-दुखों की तथा समाज के बहुजनों के भावनाओं की हुंकार होता है वही साहित्य काल के प्रवाह में कालजयी सिद्ध होता है। साहित्य और वैचारिकता के अंतःसंबंधों का विवेचन करते हुए डॉ.बलदेव वंशी कहते हैं, "वैचारिक सरोकारों, संघर्षों से जुड़कर काव्यानुभूति का पुनर्संस्कार होता है। वह विचार की अनुवर्तिनी बनती है। अपने समय की लड़ाइयों में हिस्सेदारी कायम करके अपनी अनूगूंजें सुदूर समय तक फैला देती है। ऐसी कविता तब अपनी प्रासंगिकता और प्रामाणिकता में चिरस्थायी पहचान पैदा कर इतिहास का स्थायी हिस्सा बन जाती है।"१ कविता हो या साहित्य की कोई भी विधा विचारों की व्यापकता उसे सर्वव्यापक बना देती है। मनुष्य के मन में निरंतर नये-नये विचार तथा कल्पना आती रहती हैं। इन्हीं विचारों को साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। आधुनिक काल में अपनी वैचारिकता ने पूरे विश्व को प्रभावित किया है उनमें मार्क्स, फ्रायड, डार्विन, नितसे, महात्मा फुले, महात्मा गांधी, बाबासाहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जैसे विचारों का नाम आदरपूर्वक लिया जाता है। भारतीय साहित्य को आज जिस विचारक ने सर्वाधिक प्रभावित किया है वे हैं डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर। आज भारतीय साहित्य में दलित साहित्य सर्वाधिक चर्चित

साहित्य है। दलित साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि डॉ.अम्बेडकर की क्रांतिकारी विचारधारा है।

हिंदी में दलित साहित्य के अविर्भाव की पृष्ठभूमि

दलित साहित्यकार वास्तव में डॉ. अम्बेडकर के दिशा निर्देशों का अनुपालन करते दिखाई देते है, ''हमारे साहित्यकारों का कर्तव्य है कि तत्परता और सावधानीपूर्वक तथा सतर्क से जीवन मूल्यों तथा सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करें। उनका विकास करें। अपने विचार सीमित तथा संकुचित न रखें। उन्हें विशाल बनाए। अपनी वाणी को चहारदीवारी से बाहर निकलने दें। यह भूल न जाएँ कि अपने देश में उपेक्षितों, दलितों एवं दुखियों का अपना अलग विश्व है। उनके दुःख, उनकी व्यथा समझें, और अपनी सृजनशक्ति उनके जीवन की उन्नति के लिए होम कर दें। यही सच्ची मानवता होगी।''२ आंबेडकरवाद का प्रभाव और प्रेरणा ही दलित साहित्य के अविर्भाव की पृष्ठभूमि है।

आज भारतीय साहित्य में अनेक प्रकार के विमर्शों को लेकर चर्चाएँ हो रही हैं। विमर्श का मोट तौर पर तात्पर्य है किसी विचार को उसके विविध आयामों से विवेचित करना। आज का समय विभिन्न प्रकार के विमर्शों का समय है। जिस विचार ने आज के समाज जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित किया है उस विचार का प्रतिबिंब जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दिखाई देता है। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज जीवन को भारतीय सवंधान ने पूरी तर हसे प्रभावित किया है। पुराणी मान्यताएँ, पुरणी विधियाँ एक क्षण में निरस्त कर दी गयी। देश का संविधान स्वतंत्र भारत के लिए एक ऐसा ग्रंथ बना जो मानवीय मूल्यों की न केवल प्रतिष्ठापना करता है बल्कि उसका संरक्षण भी करता है। भारतीय संविधान के निर्माता बाबासाहेब डॉ.भीमराव अम्बेडकर ने अथक परिश्रम से स्वतंत्र भारत का संविधान का निर्माण किया। उनके समग्र चिंतन का सार संविधान में दिखाई देता है। २६ जनवरी १९५० से संवैधानिक अमंल का प्रभाव भारतीय समाज पर दिखना शुरू हो गया। देश का राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिदृश्य पूरी तरह से बदल गया। भारतीय धर्म व्यवस्था ने जिन्हें अस्पृश्य घोषित कर उनके जीवन के समस्त अधिकार छीन लिए थे ऐसे समाज को अधिकार प्राप्त हुए। डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर को यहाँ के दलित-पिछडों ने अपना उद्धारक माना। उनके प्रेरणादायक व्यक्तित्व एवं क्रांतिकारी चिंतन को अपने जीवन में उतारना शुरू किया। ''सामाजिक व्यवस्था औरविषमता के विरूद्ध आंदोलन खडा करके एक नये समाज का निर्माण करना, यह आंबेडकरवादी साहित्य का प्रमुख उद्देश्य है।''३ सदियों से दबे-कुचले समाज समूह ने डॉ. अम्बेडकर के क्रांतिसुक्त ''पढो-जुडो-लढों'' को आत्मसात कर शिक्षा ग्रहण करना आरंभ किया। जिसके परिणाम स्वरूप पूरे भारत वर्ष में शिक्षा की लहर निर्माण हो गयी। शिक्षित दलितों ने अपने व्यक्तिगत तथा सामूहिक अनुभव को अभिव्यक्त करना आरंभ किया। यही अभिव्यक्ति दलित साहित्य के नाम से आज प्रतिष्ठित हैं।

दलित साहित्य : विभिन्न विचार -

भारतीय परिपार्श्व में देखने पर पता चलता है कि सबसे पहले दलित चेतना का महाराष्ट्र में उदित हुई। इस संदर्भ में प्राख्यात हिंदी आलोचक डॉ. मैनेजर पाण्डेय ने अनूप शुक्ल से बातचीत के दौरान दलित चेतना की शुरुआत कहां से प्रारम्भ होती है, इस पर कहा है, "आन्दोलन से पैदा होने वाली ऐसी चेतना दलित समाज में सबसे पहले महाराष्ट्र में जागी। वहां १९वीं सदी में ज्योतिबा फुले ने शूद्रों, अतिशूद्रों तथा स्त्रियों की गुलामी के विरुद्ध जीवन भर वैचारिक और व्यावहारिक संघर्ष चलाया। उन्होंने सन् १८७३ में 'गुलामगीरी' नामक पुस्तक लिखी थी, जिसे दलित आन्दोलन का घोषणा पत्र और बुनियादी दस्तावेज कहा जाता है। महात्मा फुले के वैचारिक अभियान की एक विशेषता यह भी है कि उन्होंने भारतीय समाज और संस्कृति की इतिहास की दलितों की

दृष्टि से व्याख्या की और हिन्दू समाज की संरचना में दलितों की पराधीन स्थिति का विस्तृत विश्लेषण करते हुए दलित समुदाय में जागरण और विद्रोह की चेतना पैदा की। उन्होंने दलितों और स्त्रियों की शिक्षा के लिए स्कूल खोला, जिसमें उनकी पत्नी सावित्री बाई अध्यापिका बनीं। यह एक तरह से युगों से शिक्षा और ज्ञान से वंचित दलितों तथा स्त्रियों को शिक्षित करते हुए, उन्हें मानसिक गुलामी से मुक्ति की प्रेरणा देने का काम था। महात्मा फुले ने सन् १८४८ में पुणे के आसपास कई स्कूल खोले। सन् १८५१ में उन्होंने दलित कन्याओं के लिए एक स्कूल खोला, जिसमें ज्योतिबा और उनकी पत्नी सावित्री बाई फुले दोनों पढ़ाते थे।"४ दलित साहित्य अर्थात केवल दलित जीवन का चित्रण करना भर नहीं है बल्कि दलितों के जीवन में हुए क्रांतिकारी परिवर्तनों का चित्रण करना है। दूसरे शब्दों में जिस साहित्य में डॉ.अम्बेडकर जी के क्रांतिसुक्त का 'पढो-जुडो-लढों' का प्रत्यक्ष प्रतिबिंब दिखाई देता हैं वह दलित साहित्य है। जिसका आरंभ सर्वप्रथम मराठी भाषा साहित्य में हुआ।

दलित साहित्य को लेकर आज अनेक प्रकार के मतमतांतर दिखाई देते हैं। कुछ तो दलित साहित्य के अस्तित्व पर ही प्रश्न चिह्न लगाते हैं। परंतु दलित साहित्य चर्चा और वाद-विवाद से उपर उठा एक स्थापित साहित्यक आंदोलन के रूप में उभरा है। भारतीय साहित्य को दलित साहित्य ने न केवल समृद्ध किया है बल्कि उसका दायदा भी व्यापक कर दिया है। दलित साहित्य की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए माताप्रसाद लिखते हैं, "दलित साहित्य वह साहित्य है, जो वर्ग समाज में, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षिक और राजनीतिक दृष्टि से दलित, शोषित, उत्पीड़ित, अपमानित, उपेक्षित, तिरस्कृत, वंचित, निराश्रित, बाधित, अस्पृश्य और असहाय हैं, उन पर साहित्य की जो रचनाएं होती हैं, वही दलित साहित्य की श्रेणी में आती हैं। इसमें बन्धनों में जकड़ी स्त्रियां, बंधुआ मजदूर, दास, घुमन्तू जातियां, अनुसूचित जातियां और अनुसूचित जन जातियां आती हैं। दलित साहित्य वेदना, चीख और छटपटाहट का साहित्य है।"५ यह परिभाषा दलित साहित्य का दायरा व्यापक करते हुए दलित साहित्य की वस्तुनिष्ठ प्रकृति का विवेचन करती है । कंवल भारती दलित साहित्य इस अवधारणा का विवेचन करते हुए कहते हैं, "दलित साहित्य से अभिप्राय उस साहित्य से है, जिसमें दलितों ने स्वयं अपनी पीड़ा को रूपायित किया है। अपने जीवन-संघर्ष में दलितों ने जिस यथार्थ को भोगा है, दलित साहित्य उसी की अभिव्यक्ति का साहित्य है। यह कला के लिये कला नहीं, बल्कि जीवन का और जीवन की जिजीविषा का साहित्य है।"६ मराठी के प्रसिद्ध कहानीकार बाबूराव बागुल ने दलित साहित्य के सम्बन्ध में अपनी मौलिक धारणा को स्पष्ट करते हुए कहा है कि "दलित साहित्य वह विचार है, जो मनुष्य को शिक्षित करता है, जो मनुष्य को देव, धर्म, देश से भी उच्च स्तर पर रखता है। यह वह विचार है, जो आज के युग से मेल खाता है। दलित साहित्य का केन्द्रबिन्दु मानव है और वह मानव के इर्द-गिर्द ही घूमता है।" ७ दलित साहित्य डॉ. अम्बेडकर की परिवर्तनवादी विचारधारा को अपना आदर्श स्रोत मानता है। दलित साहित्य वास्तव में डॉ.अम्बेडकर की मानवतावादी विचारधारा का साहित्यिक रूप है। इस संदर्भ में प्रसिद्ध मराठी साहित्यकार शरण कुमार लिम्बाले के विचार दृष्टव्य हैं, "दलित साहित्य अपना केन्द्रबिन्दु मनुष्य को मानता है। बाबा साहब के विचारों से दलित को अपनी गुलामी का एहसास हुआ, उनकी वेदना को वाणी मिली क्योंकि उस मूल समाज को बाबा साहब के रूप में अपना नायक मिला। दलितों की वह वेदना दलित साहित्य की जन्मदात्री है। दलित साहित्य की वेदना 'मैं' की वेदना नहीं, वह बहिष्कृत समाज की वेदना है।"८ समस्त भारत में बहिष्कृत समाज भले ही अलग-अलग नामों से हैं परंतु उनकी वेदना और पीडा एक जैसी

हैं। वे सभी विकृत एवं विषम वर्ण व्यवस्था के तथा जाति व्यवस्था के शिकार हैं। दलित साहित्य इन सब कोरा वर्णन नहीं बल्कि संवेदना की दृष्टि से करता हे। दलित चेतना अर्थात प्रखर अम्बेडकरवादी चेतना जो तमाम बहिष्कृत समूदाय को सिखाती है शिक्षित होने के लिए, संगठित होने के लिए तथा अन्याय-अत्याचार के विरूद्ध डटकर मुकाबला करने के लिए।

डॉ.अम्बेडकर के क्रांतिकारी विचारों से प्रेरित तेजस्वी साहित्य दलित साहित्य के नाम से आज पूरी तरह से सर्वमान्य विमर्श के रूप में अपनी जगह बना चुका है। विधा चाहे कोई भी दलित साहित्यकारों ने अपनी उर्ध्वचेतना को अभिव्यक्त किया है। अन्य विधाओं की अपेक्षा दलित कहानी साहित्य में दलित चेतना अत्यंत सार्थक रूप में अभिव्यक्त हुई है। दलित साहित्य का वैचारिक पक्ष हिंदी दलित कहानियों में अत्यंत ठोस रूप में उभरकर सामने आता है।

दलित साहित्य की कहानी विधा का वैचारिक पक्ष : हिंदी का कहानी साहित्य अत्यंत समृद्ध है। इसकी एक उज्वल परंपरा रही है। स्वातंत्र्योत्तर कालखंड में हिंदी कहानी का उत्कर्ष एवं विकास अत्यंत तेजी से हुआ है। किसी जमाने में राजा-महाराजों ही कहानी के प्रमुख पात्र हुआ करते थे परंतु आधुनिक हिंदी कहानी आम जनता के सुख-दुखों को व्यक्त करने वाली कहानी बन गयी। आम आदमी हिंदी कहानी का नायक बना। उसकी संवेदनाओं को लेकर कहानियाँ लिखी गयी। परंतु भारतीय समाज व्यवस्था में अस्पृश्य अथवा दलित कहे जाने वाले समाज की समग्र संवेदना को प्रकट करने वाली कहानियों का लेखन नहीं होता था। अलबत्ता कुछ कहानियों में दलित जीवन का वर्णन आता है परंतु बडे खेद के साथ कहना पडता है कि इन कहानियों के पात्र इतने लाचार, इतने विवश तथा घृणा के पात्र होते थे कि किसी प्रकार की चेतना उनमें नहीं होती थी। ऐसी कहानियों के दलित पात्र दुत्कार सहते, खिसियाते, पेट की आग को बुझाने के लिए किसी भी हद तक जाते या फिर सहानुभूति बटोरने वाले होते थे। परंतु इनमें चेतना नाम की कोई बात नहीं थी। व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न उठाने का इनमें साहस नहीं होता था। अन्याय अत्याचार चुपचाप सहन करने वाले, दूसरों की दया पर जीने वाले तथा अपनी विवशता का रोना रोने वाले पात्र हुआ करते थे। परंतु डॉ.अम्बेडकर के क्रांतिकारी विचारधारा के परिणाम स्वरूप हिंदी कहानी में एक नया मोड आया। दलित लेखकों ने हिंदी में ऐसी कहानियाँ लिखी जिनके पात्र बडे ही स्वाभिमानी, खुद्दार तथा अन्याय अत्याचार को विरोध करने वाले तथा अम्बेडकरवादी क्रांतिचेतना से लैस दिखाई देते हैं।

साहित्य और विचार का गहरा संबंध होता है। साहित्यकार अपने साहित्य में किसी न किसी विचार को तथा विचारधारा को ही प्रस्तुत कतरा है। इस संबंध में डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त का कहना है कि "विचार में सत्य के अनुसंधान का उद्देश्य रहता है, जबकि भाव में सत्य की अपेक्षा सुख, तृप्ति और आनन्द प्राप्ति का लक्ष्य रहता है, यह दूसरी बात है कि कई बार सत्यानुसंधान की प्रवृत्ति भी ऐसी भावना के रूप में विकसित होती चली जाती है कि जिससे कि सत्य की उपलब्धि आनन्दोपलब्धि के तुल्य हो जाती है।"६ जिस साहित्य का वैचारिक पक्ष जितना महान तथा व्यापक होता है वह साहित्य उतना ही महान तथा सर्वव्यापक एवं कालजयी होता है।

हिंदी की पहली दलित कहानी कौन सी है ? तथा इसके कहानीकार कौन हैं? इसको लेकर अनेक प्रकार के मतमतान्तर दिखाई देते हैं। परंतु अधिकांश विद्वान मोहनदास नैमिशराय को हिंदी का पहला कहानीकार तथा 'सलाम' कहानी को हिंदी की पहली मौलिक कहानी मानते हैं, ''हिंदी दलित कहानियों को लेकर अनेक मत-मतांतर मिल सकते हैं। फिर भी तय करने की आवष्यकता है। भले हम हिंदी साहित्य के प्रतिमान सौंदर्य शास्त्र को छोउकर उसके स्थाप पर हमारे साहित्य के प्रतिमान तथा कथा तत्वों

की दृष्टि से देखें तो ओम प्रकाष वाल्मीकि की कहानी 'सलाम' सर्वप्रथम हमारा ध्यान आकर्षित करती है। जो सन १९९३ में प्रकाशित हुई है। '' हिंदी साहित्य में दलित लेखकों द्वारा प्रथम दलित कहानी लिखने का श्रेय ओमप्रकाश वाल्मिकी को ही जाता है।''१० कविता के बाद हिन्दी दलित साहित्य में जिस विधा में सबसे ज्यादा सृजन हुआ है, वह कहानी है। ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, दयानन्द बटोही, सूरजपाल चौहान, कुसुम वियोगी, विपिन बिहारी, कावेरी, बुद्धशरण हंस, पारसनाथ, जयप्रकाश कर्दम, सत्यप्रकाश और सुशीला टाकभौरे इत्यादि कथाकारों ने इसमें विशेष योगदान दिया है। बुद्ध शरण हंस की 'देव साक्षी', 'को रक्षित वेद', डॉ दयानन्द बटोही की 'कफनखोर', 'सुरंग', कावेरी की 'द्रोणाचार्य एक नहीं', ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'सलाम', मोहनदास नैमिशराय की 'आवाजें', सुरेश पंजम की 'बेड़ी' सत्यप्रकाश की 'सायरन', बिरादरी भोज', जयप्रकाश कर्दम की 'तलाश', रामनिहोर की 'विस्फोट', मुकेश मानस की 'उन्नीस सौ चौरासी', रजत रानी मीनू की 'हम कौन हैं', इत्यादि महत्वपूर्ण कहानियां हैं।

डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर के विचारों को अपने लेखन का विचारतत्व मानक हिंदी कहानियों का सृजन करने वाले लेखकों ने अपनी कहानियों में डॉ.अम्बेडकर की विचारधारा को बहुत ही स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया है। मुख्यतः डॉ.अम्बेडकर का संदेश ' शिक्षित बनो, संगठित बनो और संघर्ष करो' इस विचार को केंद्र मानकर दलित कहानीकारों ने अपनी कहानियाँ लिखी हैं। डॉ.अम्बेडकर की वैचारिकी का संवहन करने वाली कहानियाँ तथा उनकी मूलसंवेदना को हम निम्न बिंदुओं के आधार पर स्पष्ट कर सकते हैं-

शिक्षा के लिए संघर्षरत नायक तथा परिवारजन -

हिन्दी साहित्य में जिनकी कहानियों ने दलित जीवन को उसकी समग्रता से उजागर किया है ऐसे ओमप्रकाश वाल्मीकि इस संदर्भ में कहते हैं कि "दलित जीवन की पीड़ाएं असहनीय और अनुभव-दग्ध हैं। ऐसे अनुभव जो साहित्यिक अभिव्यक्तियों में स्थान नहीं पा सके। एक ऐसी समाज-व्यवस्था में हमने सांसें ली हैं, जो बेहद क्रूर और अमानवीय है, जो दलितों के प्रति असंवेदनशील भी।"११ जयप्रकाश कर्दम द्वारा लिखित 'चमार' कहानी का दलित पात्र सुक्खा पर अनेक मुसिबतों के पहाड टूटते हैं फिर भी वह किसी तरह से संघर्ष कर वह जीवन-यापन करता था। सुक्खा अपने बेटे को शहर पढ़ने के लिए भेज देता है। एक दलित का बेटा शहर में पढ़ाई कर रहा है, यह बात गाँव के सवर्ण लोगों को सहन नहीं होती। इस घटना से गांव में भूचाल आ जाता है। गाँव का ब्राह्मण इसे धर्म भ्रष्ट के रूप में देखता है और गाँव ठाकुर को सुक्खा के खिलाफ भडकाते हुए कहता है, "ठाकुर साहब! आज तक किसी का बेटा शहर पढ़ने नहीं गया। कई पीढ़ियों से हमारे आप के-पुरखे इस गांव में रहते आए है। कभी किसी ब्राह्मण-ठाकुर या सेठ साहूकार का बेटा इतना ऊंचा नहीं पढ़ा, लेकिन यह दो कौड़ी का आदमी, यह चमार की औलाद हम सबके मुंह पर कालिख पोतने चला है-बेटे को ऊची तालीम के लिए शहर भेजकर। यह अपमान है ठाकुर साहब, हम सबके मुंह पर चाटा है।"१२ यह सामाजिक व्यवस्था इतनी विकृत है कि यहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपने जेहन में जाति व्यवस्था को ढोने के लिए मजबूर है। भारतीय समाज वर्ण-व्यवस्था को न केवल मानता है बल्कि उसे मजबूत करने के लिए अपनी तरफ से तरह से कोशिश करता है। यह शिक्षा उसे बचपन से ही दी जाती है।

'संगठित बनो' सूत्र का महत्व प्रतिपादित करनेवाली कहानियाँ -

संगठन में असीम ताकत होती है। इसलिए डॉ.अम्बेडकर ने समस्त दलितों को यह संदेश दिया था कि यदि इस निर्मम व्यवस्था से टक्कर लेनी है तो संगठित होना जरूरी है।

भारतीय समाज में जाति एवं वर्ण व्यवस्था इतनी कठोर थी कि दलित के घर के किसी भी अतिथि को दलित ही समझा जाता था। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी ऐतिहासिक कहानी 'सलाम' में इस विकृति का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है। हरिश के दोस्त कमल को देखकर चायवाला और बिफर पड़ा, "चूहड़ा है। खुद कू बामन बतारा है। जुम्मन चूहड़े का बराती है। इब तुम लोग फैसला करो। जो यो बामन है तो चूहड़ों की बारात में क्या मूत पीणे आया है। जात छिपाके चाय मांग रा है। मैन्ने तो साफ कह दी। बुद्धू की दूकान पे तो मिलेगी ना चाय चूहड़ों-चमारों कू, कहीं और ढूंढ़ ले जाके।"१३ कहानी का यह प्रसंग भारतीय समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव को रेखांकित करता है। ऐसी कुप्रथाओं को तथा जनमानस में व्याप्त विकृति को निकालने के लिए संगठित होकर इसका विरोध करने की बात डॉ.अम्बेडकर ने कही थी। हिंदी के दलित कहानीकारों ने अपनी कहानियों में संगठित होकर संघर्ष करने के अनेक चित्रण प्रस्तुत किए हैं।

सूरजपाल चौहान दलित कहानी के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। उनकी कहानियों में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की विचारधारा का प्रतिबिंब स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। डॉ.अम्बेडकर का मानना था कि अन्याय करने वाले से अन्यास सहनकरनेवाला अधिक गुनहगार होता है। इसलिए वे शिक्षा और संगठन के साथ-साथ संघर्ष करने के लिए कहते है। सूरजपाल चौहान की कहानी 'छूत कर दिया' का मुख्य पात्र बिहारी शिक्षा के बल पर आई.ए.एस. बनकर जब गॉव में आता है तो गॉव के प्रधान लाल गुलाब उसका स्वागत करते हैं तथा बिहारी को गॉव की रामलीला का उद्घाटन करने के लिए आमंत्रित करते हैं। परंतु रामलीला में राम बना टूटपूँजिया कलाकार केवल उच्च जाति का होने के कारण बिहारी द्वारा रामलीला के उद्घाटन पर आपत्ती जताता है। अपनी जातिवादी मानसिकता का विकृत प्रदर्शन करते हुए वह कहता है, ''अरे चमार के क्या छूत करेगा ?''१४ इससे आय.ए.एस. बना बिहारी जो डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के क्रांतिकारी विचारों से प्रेरित एवं प्रभावित है, राम बने कलाकार के मुँह पर एक जोरदार तमाचा जड देता है। गाँव का वातावरण गर्म हो जाता है। दलित विरूद्ध सवर्ण का झगडा शुरू होने की नौबत आ जाती है। पूरी दलित बस्ती बिहारी के साथ है। वे संगठित हो कर बिहारी का साथ देते हैं और सवर्ण मानसिकता का जबाब देते हुए कहते हैं, ''यदि बिहारी को छू भर दिया तो पूरे गाँव की ईंट से ईंट बजा दी जाएगी।'' यह चेतना डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर के क्रांतिकारी विचारों का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

संघर्ष की प्रेरणा देनेवाली कहानियाँ -

डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर जी ने कहा है ''हिन्दू धर्म शोषण पर आधारित धर्म है, यहाँ तर्क के लिए कोई स्थान नहीं है। जहाँ तर्क नहीं होगा वहाँ विकास भी संभव नहीं है। भारत की दीन हीन दशा के लिए शाश्वत एवं सनातनवादी हिंदू धर्म ही उत्तरदायी है। ईश्वर की परिकल्पना ब्राह्मणोंन ने की है। अपने शोषण को आधार प्रदान करते वाली ब्राह्मणीय संस्कृति द्वारा रचा गया यह एक षडयंत्र है। जब तक इस षडयंत्र का पर्दाफाश नहीं होगा, तब तक दलितों की मुक्ति संभव नहीं है।''१५ वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था जैसी विकृति को खत्म करने के लिए तथा इसके विरूद्ध लडने के लिए प्रेरित करनेवाली कहानियाँ हिंदी में लिखी गयी हैं। सूरजपाल चौहान दलित कहानी के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। उनकी कहानियों में डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर की विचारधारा का प्रतिबिंब स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। डॉ.अम्बेडकर का मानना था कि अन्याय करने वाले से अन्यास सहनकरनेवाला अधिक गुनहगार होता है। इसलिए वे शिक्षा और संगठन के साथ-साथ संघर्ष करने के लिए कहते है। सूरजपाल चौहान की कहानी 'छूत कर दिया' का मुख्य पात्र बिहारी शिक्षा के बल पर आई.ए.एस. बनकर

जब गॉव में आता है तो गॉव के प्रधान लाल गुलाब उसका स्वागत करते हैं तथा बिहारी को गॉव की रामलीला का उद्घाटन करने के लिए आमंत्रित करते हैं। परंतु रामलीला में राम बना टूटपूँजिया कलाकार केवल उच्च जाति का होने के कारण बिहारी द्वारा रामलीला के उद्घाटन पर आपत्ती जताता है। अपनी जातिवादी मानसिकता का विकृत प्रदर्शन करते हुए वह कहता है, ''अरे चमार के क्या छूत करेगा ?''१६ इससे आय.ए.एस. बना बिहारी जो डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के क्रांतिकारी विचारों से प्रेरित एवं प्रभावित है, राम बने कलाकार के मुँह पर एक जोरदार तमाचा जड देता है। गाँव का वातावरण गर्म हो जाता है। दलित विरूद्ध सवर्ण का झगडा शुरू होने की नौबत आ जाती है। पूरी दलित बस्ती बिहारी के साथ है। वे संगठित हो कर बिहारी का साथ देते हैं और सवर्ण मानसिकता का जबाब देते हुए कहते हैं, ''यदि बिहारी को छू भर दिया तो पूरे गाँव की ईंट से ईंट बजा दी जाएगी।'' यह चेतना डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर के क्रांतिकारी विचारों का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

हिंदी दलित कहानियों में स्वानुभूतिपरकता अधितर देखी जा सकती है। कहानीकारों ने आत्मकथ्यपरक कहानियों में समाज व्यवस्था को उजागर किया है। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपना दूसरे कहानी संग्रह 'घुसपैठिये' की भूमिका में अपनी कहानियों के बारे में लिखा है, 'इन कहानियों की अन्तर्वस्तु मेरे अनुभव-जगत की त्रासदियों और दुःखों से उपजी सामाजिक संवेदनाएँ हैं। जिन्हें शब्द-दर-शब्द गहरे अवसादों के साथ यन्त्रणा से गुजरते हुए लिखा है। कुछ संस्कारवान आलोचकों को यह सब अतिरेकपूर्ण और जातिवादी लगता है। विशेष रूप से उन्हें जो साहित्य में तथाकथित सार्वभौमिकता और शाश्वत सत्यों की बात करते हैं।''१७ जातिवाद का अतिरेक खत्म करने के लिए संघर्ष अत्यंत अनिवार्य होता है। दलित कहानियों के पात्र अपने आत्मसम्मान की लडाई लढते दिखाई देते हैं।रामचन्द्र की कहानी 'पलायन' में दलित शिक्षित होकर नौकरी कर रहा है। उसे किसी प्रकार का अपमान बर्दास्त नहीं है। इस कहानी का मुख्य पात्र विजय नाम का एक दलित है, जो सरकारी नौकरी करता है। जिसका बॉस उसे बार-बार छुट्टी के दिन अपने घर पर काम करवाता तथा प्रताड़ित भी करता रहता है। आज जब अम्बेडकर जयन्ती पर छुट्टी होती है तो उसका बॉस उसे अपने घर पर काम के लिए कहता है, लेकिन विजय जयन्ती के अवसर पर गांव जाने को तैयार है। उसके घर काम करने के लिए नहीं। बॉस जब इसे डोम-चमार कहता है तो विजय उस बॉस को ए.सी. चेम्बर में बन्द करके मारता है और कहता है : "अपनी जबान सम्हाल हरामी, नहीं तो तुम्हारा त्रिलोक याद दिला दूंगा।"१८ वर्तमान हिंदी दलित कहानी के एक आश्वासक चेहरे के रूप में कैलाश वानखेड़े की ओर देखा जाता है। कैलाश वानखेड़े मध्यप्रदेश में प्रशासनिक सेवा से जुड़े हैं । भारतीय शासन-प्रशासन में व्याप्त जातिगत भेदभाव को उन्होंने न केवल देखा है बल्कि उसे भोगा भी है। यही कारण है कि उनकी कहानियों में इस भेदभाव का तथा जातिगत विभेद को बेहतर ढंग से चित्रित करते हैं। 'सत्यापन' उनकी प्रतिनिधि कहानी संग्रह है। इस संग्रह की कहानियों में डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर जी विचार प्रेरणा स्पष्ट रूप से देखाी जा सकती है। समाज व्यवस्था का 'सत्यापन' करने वाली इन कहानियों में जाति व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था तथा उससे मिलने वाला अपमान, उपेक्षा तथा तिरस्कार का मार्मिक चित्रांकन हुआ है। एक दलित युवक किसी सरकारी दफ्तर में अपना फोटो 'सत्यापन' (अटेस्टेड) करवाने जाता है। यहाँ उसकी कालोनी का नाम सुनकर ही क्लर्क उसे रोक देता है, घंटों खड़ा रखता है। इसी उपक्रम में वह 'भाऊ साहेब इंगले' से मिलता है। उसकी भी शिकायत है। अस्पताल में पत्नी की डिलीवरी करवाने के दौरान वह तमाम उत्पीड़न झेल गया

लेकिन उसकी शिकायत है कि अस्पताल के कागजों में पते के तौर पर वह 'बौद्धवाड़ा' लिखवाना चाहता है लेकिन नर्स 'महारवाड़ा' ही क्यों लिखती है। और फिर दोनों मिलकर सरकारी दफ्तर की बाबूशाही को चुनौती दे देते हैं। यह चुनौती देने का प्रसंग डॉ.अम्बेडकर की विचारधारा का ही प्रभाव है।

निष्कर्ष – उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिंदी दलित सहित्य भारतीय साहित्य का एक आधुनातन विमर्श है। विमर्श में विचार और वैचारिक चर्चा महत्वपूर्ण होती है। दलित विमर्श भी एक विचार को लेकर चलनेवाला तथा विचार के संवाहक के रूप में प्रतिष्ठित साहित्यिक आंदोलन है। यह आंदोलन साहित्य में जिस विचारधारा को प्रतिष्ठित करता है वह विचार डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर के क्रांतिदर्शन का अभिन्न अंग है। डॉ.अम्बेडकर की विचारधारा वास्तव में परिवर्तनवादी तथा मानवतावादी विचारधारा है। हिंदी ही क्यों समस्त भारतीय दलित साहित्यकार अम्बेडकरवादी विचारदर्शन से प्रभावित एवं प्रेरित दिखाई देते हैं। हिंदी साहित्य की कहानी विधा अत्यंत लोकप्रिय तथा निरंतर प्रगतिशील विधा है। हिंदी की कहानी विधा को और अधिक लोकप्रिय एवं व्यापक रूप देने ने दलित कहानीकारों का महत्वपूर्ण योगदान है। दलित कहानी ने हिंदी कहानी विधा को व्यापक और सर्वसमावेशक बनाया है। दलित कहानी का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं है। बल्कि दलित जीवन का व्यापक चित्रण दलित चेतना के साथ करना है। डॉ.अम्बेडकर की प्रेरणा से दलित जीवन में जो चेतना विकसित हुई है उसका संवेदनशील वर्णन दलित कहानीकारों ने किया है। हिंदी की दलित कहानियों में कहानीकारों ने डॉ.अम्बेडकर का क्रांतिदर्शन वैचारिक पृष्ठभूमि के रूप में स्वीकृत किया है। डॉ.अम्बेडकर ने भारत के दलितों को उनके उद्धार के लिए, उन्नति के लिए जो क्रांतिसूत्र दिया था, 'पढो-जुडो-लढो' से प्रेरित होकर दलित कहानीकारों ने कहानियों का सृजन किया है।

संदर्भ –

१. वंशी डॉ. बलदेव, आधुनिक हिन्दी कविता में विचार, पृष्ठ-१०३.
२. युद्धरत आम आदमी, अंक ४१, जनवरी-जून १९९८, पृष्ठ ०३
३. बयान, मार्च, २००९ पृष्ठ २६
४. डॉ. मैनेजर पाण्डेय : दलित चेतना : साहित्य, पृष्ठ-६-७.
५. दलित चेतना : साहित्य, सम्पादक-रमणिका गुप्ता पृष्ठ-३२-३३.
६. कंवल भारती : उत्तर प्रदेश, सितम्बर-अक्टूबर, २००२ पृष्ठ-१२
७. बाबूराव बागुल : दलित साहित्य और सामाजिक न्याय, पृष्ठ-८८
८. रमणिका गुप्ता : उत्तर प्रदेश, सितम्बर-अक्टूबर, २००२, पृष्ठ-४३
९. डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त : साहित्य विज्ञान, पृष्ठ-१५८
१०. कोव्हापात्रा प्रमोद, हिंदी दलित कहानी पृष्ठ १७९
११. ओमप्रकाश वाल्मीकि : जूठन, पृष्ठ-७.
१२. दूसरी दुनिया का यथार्थ : सम्पादक-रमणिका गुप्ता, पृष्ठ-५०.
१३. ओमप्रकाश वाल्मीकि : सलाम कहानी संग्रह, पृष्ठ-१३.
१४. चौहान सूरजपाल, हैरी कब आयेगा, पृष्ठ ३१
१५. अन्याथा अंक १३वा जून २००४ पृ १५६
१६. चौहान सूरजपाल, हैरी कब आयेगा, पृष्ठ ३१
१७. ओमप्रकाश वाल्मीकि, घुसपैठिय, भूमिका
18. हंस, अगस्त, 2004, पृष्ठ–157.

❑❑❑